बच्चे पेड़ लगाकर मूल्यवान सबक़ सीखते हैं

शुचि दुबे

वर्षों से प्रकृति के अन्धाधुन्ध दोहन ने पृथ्वी के लिए पर्यावरणीय असन्तुलन पैदा कर दिया है। इसलिए पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण के प्रमुख विचारणीय मुद्दा बन जाने के बाद भी हम संगोष्ठियों, भाषणों और नारेबाज़ी से ऊपर नहीं उठ पाए हैं और इसके परिणामस्वरूप लगातार पर्यावरणीय क्षरण के परिणाम भुगत रहे हैं। यह आवश्यक है कि पर्यावरण के हर पहलू को उसके संरक्षण से जोड़ा जाए। हम इस समस्या से तब तक जूझते रहेंगे जब तक हर उम्र के लोगों, ख़ासतौर पर बच्चों को, पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व के प्रति सचेत नहीं किया जाता और इसमें शामिल नहीं किया जाता।

प्रारम्भिक कक्षाओं में पर्यावरण संरक्षण विषय को गतिविधि-आधारित शिक्षण से जोड़ा जाना चाहिए। बच्चों को पर्यावरण के बारे में उनकी प्रथम भाषा और सरल शब्दों में समझाना होगा। इसके लिए हमें उन्हें उनके आस-पास के परिवेश, कक्षा की गतिविधियों और कक्षा के बाहर की प्रक्रियाओं से जोड़कर उनमें वैचारिक स्तर पर पर्यावरण की समझ को विकसित करना होगा।

व्यवहारिक योजनाएँ

एक उच्च प्राथमिक स्कूल में शिक्षकों ने बच्चों के साथ स्कूलों, गाँव और आस-पास की वृक्षहीन पहाड़ियों में पेड़ लगाए। उन्होंने अपनी दैनिक गतिविधियों के हिस्से के रूप में उन्हें पानी और खाद दिया और अपने जीवन में पेड़ों के महत्त्व को समझा। इस काम को शुरू करने की तैयारी में कई महीने लग गए। इस काम को आगे बढ़ाने के लिए स्कूल ने सबसे पहले बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियाँ कीं।

बारिश के मौसम के दौरान शिक्षकों ने बच्चों के साथ स्कूल परिसर में पेड़ लगाए। इस दिन एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। वृक्षारोपण कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के अधिकारियों तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया था। कुछ महीनों तक इन पेड़ों की अच्छी वृद्धि हुई। लेकिन सर्दियों की 15 दिनों की छुट्टियों के दौरान जब इन्हें पानी नहीं मिला तो सारे पेड़ नष्ट हो गए। इससे यह एहसास हुआ कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने कर्तव्य की पूर्ति के लिए केवल पेड़ लगाना ही काफ़ी नहीं है।

अगली बारिश के मौसम में, शिक्षा विभाग ने स्कूलों को उनके परिसरों में पेड़ लगाने के निर्देश दिए। एक स्वतंत्र संस्था ने भी पेड़ लगाने के लिए स्कूल से सम्पर्क किया। लेकिन पिछले साल लगाए गए पेड़ों की दुर्दशा को देखते हुए शिक्षकों को लगा कि इस मामले पर उन्हें बच्चों के साथ चर्चा करनी चाहिए। पेड़ों को तभी लगाना चाहिए जब बच्चे पेड़ों की पूरी ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार हों। इस मुद्दे पर बाल पंचायत के लिए चुने गए बच्चों के साथ चर्चा की गई, जो इस समय तक काम करने लगी थी। बच्चे वृक्षारोपण और पेड़ों के रखरखाव की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार हो गए और उनके साथ निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गई :

1. कौन से पेड़ लगाने हैं? बच्चों को इसका जवाब पता था, क्योंकि उन्होंने अपने आस-पास आसानी से उगने वाले पेड़ों को देखा था और उनमें से उन पेड़ों की पहचान कर ली थी जिन्हें बकरी आदि जानवरों द्वारा खाया नहीं जाता। बच्चों ने हमें बताया कि बकरियाँ शरीफ़ा के पेड़ों को नहीं खाती हैं।
2. प्रत्येक कक्षा के बच्चों की एक टीम बनाई गई थी जो प्रतिदिन और छुट्टियों में पेड़ों को पानी देते थे। इस कार्य की ज़िम्मेदारी बाल पंचायत के पर्यावरण पंच को दी गई थी।
3. पेड़ों को जानवरों से बचाने के लिए स्कूल के शिक्षकों ने बाँस के ट्री-गार्ड की व्यवस्था करने की ज़िम्मेदारी ली।

वृक्षारोपण से एक दिन पहले, बच्चों ने प्रत्येक कक्षा के मुताबिक़ पेड़ों को लगाने के स्थान तय किए और फिर वहाँ गड्ढे खोदे। चूँकि स्कूल ग्रामीण परिवेश में था, इसलिए अधिकांश बच्चे जानते थे कि गड्ढा कितना चौड़ा और गहरा होना चाहिए। गाँव के लोगों को भी स्कूल में चल रहे वृक्षारोपण अभियान के बारे में बच्चों से पता चला और वे भी मदद के लिए आगे आए। निर्धारित दिन पर बच्चों ने अपनी पसन्द के अनुसार नीम, पीपल, अमरूद, जामुन और शरीफ़ा के पेड़ लगाए।

सुबह की प्रार्थना-सभा और कक्षाओं में शिक्षक अनौपचारिक रूप से पेड़ों के बारे में लगातार बात कर रहे थे। बच्चे भी काफ़ी सतर्क थे। वे पेड़ों को पानी देने के लिए आधे घण्टे पहले ही स्कूल आने लगे। यदि पेड़ों को पानी देने के लिए बाल्टी आदि संसाधन कम होते, तो वे इन्हें अपने घरों से ले आते। वे हर रोज़

बड़ी रुचि से पेड़ों की वृद्धि को देखते। वे खाद लाते और ट्री गार्ड को व्यवस्थित करते। इस तरह से पेड़ों से बच्चों का रिश्ता बनने और उनकी सुरक्षा के प्रति चिन्ता रखने की शुरुआत हुई और फिर यह सिलसिला बढ़ता गया।

अच्छे काम को जारी रखना

यह काम छुट्टियों में भी जारी रहा। लेकिन छह सप्ताह लम्बी गर्मी की छुट्टियों को लेकर शिक्षकों को चिन्ता थी क्योंकि इस दौरान बच्चे अपने-अपने रिश्तेदारों के घर चले जाते हैं। इस मुद्दे पर बच्चों के साथ चर्चा की गई और उन्होंने इसका एक समाधान निकाला। कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे थे जो कहीं नहीं जा रहे थे और वे पेड़ों की देखभाल के लिए तैयार हो गए। बच्चों ने यह भी कहा कि सभी बच्चे अलग-अलग समय पर कहीं-न-कहीं जाएँगे, तो ऐसे में वे बारी-बारी से पेड़ों को पानी देते रहेंगे। इसका परिणाम यह हुआ कि बच्चे सबसे मुश्किल समय में भी पेड़ों को जीवित रख पाए, यानी उस वक़्त जब उन्हें पानी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। इस तरह से, बिना किसी औपचारिक शिक्षा के बच्चों में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति रूचि विकसित की गई।

अगली बारिश के मौसम में, इस कार्यक्रम को और अधिक बढ़ाया गया। बच्चों से बात करके यह तय किया गया कि पेड़ों को स्कूल के पास की पहाड़ी के चारों ओर तथा बच्चों के घरों में भी लगाना चाहिए। बच्चे बहुत उत्साहित थे। लेकिन पेड़ों को जानवरों से बचाना और पहाड़ी पर पानी की उपलब्धता एक चुनौती थी। चूँकि सभी के घरों में बैल, बकरियाँ, गाय, भैंस आदि जानवर थे, इसलिए यह निर्णय लिया गया कि घरों में पेड़ लगाने से पहले पूरे परिवार की सलाह ली जाए। स्कूल में पेड़ों के साथ किया गया प्रयोग सफल हुआ था, इसलिए गाँव वाले अपने घरों में भी पेड़ लगाने के लिए तैयार हो गए थे। बच्चों ने पेड़ों की देखभाल करने और पानी देने की ज़िम्मेदारी ली। फिर, वन विभाग और एक स्थानीय स्वतंत्र संगठन की सहायता से पेड़ लगाए गए।

पहाड़ी पर पेड़ों को लगाने के सम्बन्ध में यह निश्चय किया गया कि वहाँ शरीफ़ा के पेड़ लगाए जाएँ, क्योंकि जैसा पहले बताया गया था कि बकरियाँ उनको नहीं खातीं। पानी की आपूर्ति के लिए, पंचायत की मदद से पहाड़ी के मन्दिर पर लगे एक हैंडपम्प की मरम्मत कराई गई और बच्चों ने इन पेड़ों की भी ज़िम्मेदारी ली।

इस गतिविधि में शिक्षकों, बच्चों और उनके माता-पिता ने भी हिस्सा लिया और बिना किसी रुकावट के काम चलता रहा। अब सिर्फ़ शिक्षक ही पेड़ों, उनके संरक्षण और उनके फ़ायदों के बारे में कक्षा में चर्चा नहीं कर रहे थे, बल्कि बच्चे और उनके परिवार भी पूरी तरह से इसमें शामिल थे।

कोविड-19 का प्रभाव

लेकिन बाहर की परिस्थितियों से एक ऐसी चुनौती आना अभी बाक़ी थी जो किसी के नियंत्रण में नहीं थी — महामारी। कोविड-19 के दौरान सभी लोगों ने घरों से निकलना बन्द कर दिया था। घरों में लगे पेड़ तो सुरक्षित रहे, लेकिन पानी और देखरेख न मिल पाने से स्कूलों और पहाड़ी के पेड़ नष्ट हो गए।

हालाँकि इस पूरी प्रक्रिया के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि अगर किसी भी गतिविधि में बच्चों की पूर्ण भागीदारी हो, बच्चों को निर्णय लेने का अधिकार दिया जाए और उनके निर्णयों का सम्मान किया जाए तो बच्चे पर्यावरण सम्बन्धी संवादों को आसानी से समझ सकते हैं और उनमें शामिल हो सकते हैं।



शुचि दुबे ने देवी अहिल्याबाई होल्कर विश्वविद्यालय, इन्दौर से डिजिटल इंस्ट्रूमेंटेशन में एमई किया है। वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में अपने फ़ेलोशिप कार्यक्रम के दौरान राजस्थान टीम के हिस्से के रूप में गणित को समझने में शिक्षकों की क्षमता निर्माण करने के कार्य में शामिल थीं। वर्तमान में वे सिरोही, राजस्थान स्थित अजीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन ज़िला संस्थान में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। उन्हें चित्र बनाना और बच्चों को कहानियाँ सुनाना पसन्द है। उनसे suchi.dubay@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुनन्दा दुबे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय